खण्ड–क

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर अन्त में दिए गए किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(1)

उत्तरः–. फूल मालाएँ-अतीत और वर्तमान।

(2)

उत्तरः- जिस विशिष्ट व्यक्ति को फूलों की माला पहनाई जाए और वह उसे धारण न करे वह परोक्ष रूप से स्वयं उस सम्मान का तिरस्कार करता है और फूलों का भी अपमान करता है।

(3)

उत्तरः– लोग किसी कुंठा या कुसंस्कार के कारण फूलों की मालाओं को धारण नहीं करते।

(4)

उत्तरः– पुष्पमालाएँ उन्हें पहनाई जाती थीं जिन्हें सामाजिक दृष्टि से विशिष्ट या अति विशिष्ट व्यक्ति माना जाता था।

(5)

उत्तरः– विष्णु पुराण के आधार पर देवताओं को समुद्र-मंथन फूलों की माला का अपमान करने के प्रायश्चित स्वरूप समुद्र मंथन करना पड़ा था।

(6)

उत्तरः– फूलों की माला का अपमान करने के कारण, दुर्वासा ऋषि ने देवराज इंद्र को श्राप दिया था।

(7)

उत्तरः– पृथ्वी पर विचरण करते समय दुर्वासा ऋषि ने एक कृशांगी विद्याधरी से माला प्राप्त की थी।

(8)

उत्तरः– पुष्प मालाओं का प्रयोग मांगलिक अवसरों पर किया जाता है।

(9)

उत्तरः– देवता पूजनीय हैं इसलिए उन्हें मालाएँ पहनाई जाती हैं।

(10)

उत्तरः– गले में पहनाई गई माला को लोग उतार कर मेज़ पर रख देते हैं अथवा अपने सहायकों को दे देते हैं।

(11)

उत्तरः- समुद्र-मंथन की कथा अधिकांश भारतीय जानते हैं।

(12)

उत्तरः– दुर्वासा ने इंद्र को अहंकारी, ढीठ और ऐश्वर्य का घमंडी कहा था।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क)

उत्तरः– इनसानियत।

(ख)

उत्तरः– जो व्यक्ति जीवन के रहस्य को जानना चाहता है, उसमें इनसानियत के श्रेष्ठ गुण होने आवश्यक हैं अन्यथा वह मनुष्य कहलाने योग्य भी नहीं होता। इनसानी गुणों से ही वह पूज्य बनता है। इनसान का सबसे बड़ा धर्म भी इनसानियत के गुणों को ग्रहण करना है।

(ग)

उत्तरः– सबसे बड़ा मानवधर्म इनसानियत के उत्तम गुणों को ग्रहण करना है।

खण्ड–ख

3.

(क)

समय का सदुपयोग

मानव जीवन में समय का अत्यधिक महत्त्व है। समय के मूल्य को पहचानना ही समय का सदुपयोग है। बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता है। समय किसी का दास नहीं है। वह अपनी गति से चलता है। समय का महत्त्व न पहचानने वाला व्यक्ति अपना ही सत्यानाश करता है। एक उर्दू के शायर ने भी लिखा है–''**गया वक्त फिर हाथ नहीं आता।**''

मनुष्य जीवन में नपा-तुला ही समय होता है। जब हम अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में नष्ट कर देते हैं तब हमें होश आता है। एक कहावत भी है–''अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत।'' इसलिए प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति समय के महत्त्व को स्वीकार करता है। हमारा जीवन समय के परकोटे में बंद है। ईश्वर ने जितना समय हमें दिया है उसमें एक क्षण की भी वृद्धि होना असंभव है। जिस राष्ट्र के व्यक्ति समय के मूल्य को समझते हैं वही राष्ट्र समृद्धिशाली होता है। समय का सदुपयोग करके निर्धन धनवान्, निर्बल सबल और मूर्ख विद्वान् बन सकता है।

समय अमूल्य धन है। हमारा कर्त्तव्य है कि प्रातःकाल उठकर जो कार्य करना है उसको निश्चित कर लें और दिन भर कार्य करके उसे समाप्त कर डालें। विद्यालय से जो समय बचता है उसका सदुपयोग अन्य कलाओं को सीखने में व्यय करें। व्यर्थ की गप्पों में समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए, थोड़ा मनोरंजन करना भी आवश्यक है। आज का कार्य कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।

समय का सदुपयोग करने वाले को सभी सुखों की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति अपना कार्य समय पर करता है उसे कोई व्यग्रता नहीं होती। समय पर कार्य करने वाला व्यक्ति केवल अपना ही भला नहीं करता वरन् अपने परिवार, ग्राम तथा राष्ट्र की उन्नति में भी सहायक होता है। समय के सदुपयोग से मनुष्य धनवान्, बुद्धिमान् तथा बलवान् हो सकता है। लक्ष्मी उसकी दासी बन जाती है। उसकी संतान कभी भी पैसे के लिए दुःखी नहीं होती। यदि ध्यानपूर्वक देखें तो संसार में जितने भी महान् व्यक्ति हुए हैं, उनकी महानता के पीछे समय के सदुपयोग का मूल मंत्र छिपा हुआ है।

समय का मूल्य समय के बीत जाने पर ज्ञात होता है। समय के दुरुपयोग से दु:ख और दरिद्रता ही हाथ लगते हैं। समय का भयंकर शत्रु आलस्य है। आलस्य जीवन का कीड़ा है। यदि वह लग जाए तो जीवन नष्ट कर देता है। लखपति व्यापारी समय से चूक जाने से भिखारी बन सकता है। पाँच मिनट देर से स्टेशन पर पहुँचने से गाड़ी छूट जाती है और सारे कार्यक्रम धूल में मिल जाते हैं। परीक्षा में थोड़ी देर से पहुँचने पर छात्र परीक्षा से हाथ धो बैठता है।

समय का मूल्यांकन करके हम समय का सदुपयोग करें तो सफलता निश्चित रूप से मिल सकती है। अत: हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपने समय का सदुपयोग करें और अपने महान् राष्ट्र को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाएँ।

(ख) परीक्षाओं में बढ़ती नकल की प्रवृत्ति

प्रति वर्ष लाखों विद्यार्थी विभिन्न बोर्डों की परीक्षाएं देते हैं। स्कूलों और कॉलेजों में अनेक प्रकार की परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। किसी अच्छे स्कूल और कॉलेज में प्रवेश लेना हो, तो परीक्षा दो, किसी तरह की नौकरी पानी हो तो परीक्षा में बैठो, किसी व्यावसायिक कॉलेज अथवा कोर्स का दाखिला लेना हो या फिर प्रतियोगिता में भाग लेना हो तो परीक्षा देनी पड़ती है। परीक्षा के अनेक रूप हो सकते हैं परंतु आम तौर पर हम जिस परीक्षा से परिचित है वह लिखित परीक्षा है जो निश्चित समय में कुछ प्रश्नों के उत्तर देकर संपन्न की जाती है। बाइबल में लिखा है "हे प्रभु ! मुझे परीक्षा में मत डाल।" अब्राहम की परीक्षा भी खुदा ने ली थी। इम्तिहान के नाम से तो फरिश्ते भी घबराते हैं एक इंसान है जो बार-बार परीक्षाएँ देता है।

परीक्षा वास्तव में किसी के गुण, सामर्थ्य अथवा योग्यता की जांच के लिए होती है। वे सारे उपाय जिन से किसी के गुण, सामर्थ्य अथवा योग्यता का पता चलता है परीक्षा कह सकते हैं। शुद्ध-अशुद्ध अथवा गुण-दोष की जांच का नाम भी परीक्षा है। हमारी शिक्षा प्रणाली का मेरुदंड है—परीक्षा। हमारे स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में जो कुछ भी पढ़ा-पढ़ाया जाता है उसका लक्ष्य छात्रों की परीक्षाओं में सफल होने में सक्षम बनाना रहता है। स्कूलों और कॉलेजों में परीक्षाओं का सामान्य रूप है वार्षिक परीक्षाएं। वर्ष के अंत में छात्रों की परीक्षाएं लेकर, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करवाना और उसके आधार पर छात्रों को उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण घोषित करना परीक्षा का सामान्य प्रचलित रूप है। प्रश्न-पत्र वस्तुनिष्ठ, दीर्घ, लघु अथवा अति लघु प्रश्नों से युक्त हो सकते हैं। लाखों छात्र पढ़ते हैं, उनकी योग्यता की जाँच का और उनके स्तर-निर्धारण का कोई अन्य विश्वसनीय तरीका हम अभी तक नहीं खोज पाए इसलिए वार्षिक परीक्षाओं का ही सहारा लेना पड़ता है। ये परीक्षाएं सामान्यत: छात्रों की स्मरण शक्ति का और कभी-कभार उनकी तर्कशक्ति का मूल्यांकन करने में भी सफल रहती है।

तीन घंटे अथवा इससे भी कम समय में छात्र द्वारा वर्ष भर में पढ़ा-समझा विषय कैसे जाँचा-परखा जा सकता है ? प्रश्न-पत्रों का निर्माण वैज्ञानिक ढंग से न होने से छात्रों की योग्यता की जाँच भी त्रुटिपूर्ण रहती है। परीक्षा भवन में नकल जैसे अनुचित उपाय अपनाने से संपूर्ण परीक्षा-प्रणाली पर प्रश्न चिह्न लग जाता है। प्रश्न-पत्रों का लीक हो जाना और अध्यापकों द्वारा प्रमाद, प्रलोभन अथवा भय वश ठीक मूल्यांकन न कर पाना भी आम होता जा रहा है हमारी परीक्षा-प्रणाली की विश्वसनीयता निरंतर कम होती जा रही है।

जिस प्रकार भक्तों के लिए रामनाम का ही सहारा रहता है, उसी प्रकार कुछ छात्रों को भी केवल नकल का ही सहारा रहता है। वह समय गया जब अध्यापक की आँख बचाकर कलात्मक ढंग से नकल करनी पड़ती थी। आज तो माता-पिता अध्यापक और मित्रगण परीक्षा केंद्र के भीतर-बाहर नकल करवाने के लिए मंडराया करते हैं। 'नकल के लिए भी अकल चाहिए' यह कहावत अब पुरानी हो गई है। अब तो नकल करना, करवाना एक व्यवसाय का रूप धारण करने लगा है। अब

नकल के लिए माता-पिता के पास नोट होने ज़रूरी हैं। वर्ष भर ट्यूशन के नाम पर छात्रों का धन हरने वाले अध्यापक परीक्षा में छात्रों के संकट हरने का जिम्मा भी प्राय: लिए रहते हैं। कुछ उद्यमी छात्र आज भी नकल के लिए किताबें फाड़ने और चिटें बनाने का धंधा करते हैं। अधिक प्रगतिशील और उन्नत छात्र अपने मोबाइल पर एस० एम० एस० के सहारे भी नकल करते पाए गए हैं। उत्तर-पुस्तिकाएं घर पर मंगवा लेना अथवा बाद में कुछ पृष्ठ जोड़ देना भी कोई कठिन काम नहीं रह गया है। अपनी जगह किसी दूसरे को परीक्षा देने के लिए भेज देना भी संभव हो गया है। परीक्षाओं में इतने अनुचित तरीके अपनाए जाते हैं और मूल्यांकन में इतनी अधिक धांधली होने लगी है कि आम छात्र का विश्वास वर्तमान परीक्षा प्रणाली से उठ रहा है।

यह परीक्षा-प्रणाली छात्र के चारित्रिक गुणों का मूल्यांकन नहीं करती। चोरी-चकारी करने वालों से लेकर हत्याएं तक करने वाले अपराधी भी जेलों में बैठकर परीक्षाएं देते हैं और प्रथम श्रेणी पा जाते हैं। केवल कंठस्थ करने पर बल देने वाली परीक्षा-प्रणाली छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन नहीं कर सकती। आवश्यकता है कि सतत् चलने वाली मूल्यांकन प्रणाली स्कूल, कॉलेज स्तर पर विकसित की जाए। छात्र के ज्ञान के साथ-साथ उसकी रुचियों, विभिन्न क्षेत्रों में क्षमताओं और चारित्रिक गुणों का भी मूल्यांकन होना चाहिए।

(ग) मेरा सुंदर प्रदेश

मेरे (हमारे) प्रदेश का नाम हिमाचल है। यह मेरे दिल की धड़कनों में समाया है। हिमाचल में प्रकृति विभिन्न रूपों में हँसती-गाती दिखाई देती है। बर्फ़ से ढके ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और कल-कल करते झरने इसकी शोभा को बढ़ाते हैं। यहाँ के सीधे-साधे लोग बड़े ही मेहनती और ईमानदार हैं। यह मेरा छैला हिमाचल है। इनमें देश-भक्ति और वीरता भी कूट-कूट कर भरी है।

देश की स्वतंत्रता के बाद छोटी-छोटी रियासतों को इकट्ठा करके हिमाचल प्रदेश की स्थापना की गई थी और यह तीसरी श्रेणी का राज्य बना था। इसके बाद इसे केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया। फिर 25 जनवरी, 1971 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया। तब से लेकर हिमाचल दिन-प्रतिदिन उन्नति की मंज़िलें तय कर रहा है। अब यहाँ औद्योगिक नगर बस रहे हैं। इसके बारह ज़िले हैं। यहां के लोगों में शिक्षा का प्रसार हो रहा है। अत: इस प्रदेश को देव-भूमि भी कहा जाता है।

हिमाचल में अनेक देव-स्थान हैं। अत: इस प्रदेश को देव-भूमि कहा जाता है। कांगड़े का देवी मंदिर भी एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। इस ज़िले में ही चामुंडा देवी का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। बैजनाथ में रावण द्वारा स्थापित शिव मंदिर भी एक दर्शनीय धार्मिक स्थल है। इस शिव मंदिर के अतिरिक्त चिंतपूर्णी का मंदिर, ज्वाला जी का मंदिर भी बहुत प्रसिद्ध धार्मिक स्थल हैं। इन दोनों स्थानों में नवरात्रों में मेले लगते हैं। ऊना ज़िला में डेरा बड़भाग सिंह जी का गुरुद्वारा भी एक उच्चतम धार्मिक स्थान है। हिमाचल के हमीरपुर ज़िले से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर ज़िला बिलासपुर में बाबा बालक नाथ जी का प्रसिद्ध मंदिर है। यहाँ पर भी असंख्य भक्तजन जा कर अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर बाबा बालक नाथ जी के चरणों में माथा टेकते हैं और 'रोट' चढ़ाते हैं। इसी प्रकार हिमाचल के सिरमौर ज़िले में 'रेणुका झील' है। रेणुका परशुराम की माता थी। यह भी एक पवित्रतम धार्मिक स्थल है। ज़िला मंडी में तारा देवी का मंदिर भी अत्यंत दर्शनीय धार्मिक स्थान है।

मेरे छैल-छबीले हिमाचल की राजधानी शिमला है। इसका दुनिया भर में नाम है। इस नगर को पहाड़ों की रानी कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी। आधुनिक ढंग के विशाल भवन और सड़कें विशेषकर माल रोड इसकी अपनी शान है। इतिहास के पृष्ठों में शिमला का महत्त्पूर्ण स्थान है। प्राय: आधुनिक भारत के फैसले यहीं होते रहे हैं।

आज हिमाचल उन्नति के पथ पर अग्रसर है। नये औद्योगिक नगर उभर रहे हैं। शिक्षा का प्रसार हो रहा है। स्थान-स्थान पर स्कूलों, कॉलेजों का जाल बिछ रहा है। गाँव-गाँव तक सड़कें पहुंच रही हैं और बिजली जल रही है। पेय जल की समस्या का समाधान किया जा रहा है।

हिमाचल में हर साल लाखों सैलानी यात्रा करने आते हैं। इसी कारण हिमाचल को भारत का स्विट्ज़रलैंड कहा जाता है। हर साल इस प्रदेश में अनेक मेले आयोजित होते हैं। कुल्लू का दशहरा, चंबे का मिंजर मेला, मंडी की शिवरात्रि, कांगड़ा का नव-उत्सव, भरमौर का मणि महेश विशेष प्रसिद्ध हैं।

हिमाचल को प्रकृति ने वनों और बागों से खुशहाल बनाया है। कोटगढ़ शिमला में सेबों के बाग हैं। कुल्लू-मनाली में भी अनेक बाग हैं जिनमें अनेक तरह के फल होते हैं। कांगड़ा की पहाड़ियों पर चाय के बाग़ान हैं। इसके अतिरिक्त आलू, मटर, टमाटर आदि सब्ज़ियां भी यहां खूब होती हैं। जड़ी-बूटियों का तो हिमाचल भण्डार ही है। यहां के वनों से लकड़ी भी बहुत प्राप्त होती है जो देश की औद्योगिक उन्नति में सहयोग देती है।

फल-फूलों से लदी हिमाचल की धरती सब के दिलों को मोह लेती है। चाहे आज यहां गरीबी है, परंतु अब वह दिन दूर नहीं जब हिमाचल की भूमि सोना उगलेगी और चारों ओर खुशहाली का बोल-बाला होगा। हिमाचल प्रदेश की चप्पा-चप्पा भूमि देवी-देवताओं की भूमि है। मैं इसके उत्कर्ष और गौरव के लिए प्राण भी न्योछावर कर सकता हूँ।

(घ) विज्ञान वरदान या अभिशाप

गत दो सौ वर्षों में विज्ञान लगातार उन्नति ही करता गया है। यद्यपि इससे बहुत समय पूर्व रामायण और महाभारत काल में भी अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों का उल्लेख मिलता है, परंतु उनका कोई चिह्न आज उपलब्ध नहीं हो रहा। इसलिए 19वीं और बीसवीं शताब्दी से विज्ञान का नया अध्याय आरंभ हुआ है।

बिजली और परमाणु-शक्ति को वश में करके मनुष्य ने मानव समाज को वैभव की चरम सीमा पर पहुँचा दिया है। तेज़ चलने वाले वाहन, समुद्र के वक्षस्थल को रौंदने वाले जहाज़ और असीम आकाश में वायु वेग से उड़ने वाले विमान, नक्षत्र लोक तक पहुँचने वाले राकेट प्रकृति पर मानव की विजय के उज्ज्वल उदाहरण हैं। तार, टेलीफोन, टेलीविज़न, सिनेमा, ग्रामोफोन आदि ने हमारे जीवन में ऐसी सुविधाएँ प्रस्तुत कर दी हैं, जिनकी कल्पना भी पुराने लोगों के लिए कठिन होती है।

पहले मनुष्य का समय अन्न-वस्त्र आदि जुटाने में बीत जाता था। दिन भर कठोर श्रम करने के बाद भी उसकी आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं हो पाती थीं, परंतु अब मशीनों की सहायता से वह अपनी इन आवश्यकताओं को बहुत थोड़े समय काम करके पूरी कर सकता है और शेष घूमने-फिरने, पढ़ने-लिखने या अन्य किसी प्रकार का आनंद लेने में बिता सकता है। वस्तुत: ऐसा प्रतीत होता है कि विज्ञान एक अद्भुत वरदान के रूप में मनुष्य को प्राप्त हुआ है। यह उसकी एक लंबे समय की साधना का श्रेष्ठ फल है जो उसकी सब भावनाओं को पूर्ण करने वाला है।

प्रत्येक वैज्ञानिक आविष्कार का उपयोग मानव हित के लिए नहीं किया गया जितना मानव जाति के अहित के लिए। वैज्ञानिक उन्नति से पूर्व भी मनुष्य लड़ा करते थे, परंतु उस समय के युद्ध आजकल के युद्धों की तुलना में बच्चों के खिलवाड़ जैसे प्रतीत होते हैं। प्रत्येक नए वैज्ञानिक आविष्कार के साथ युद्धों की भयंकरता बढ़ती गई और उसकी चरम सीमा हिरोशिमा और नागासाकी में प्रकट हुई। यहां एक अणु बंब के विस्फोट के कारण तीन-तीन लाख व्यक्ति हताहत हुए। आजकल भी उद्जन बंब और न्यूट्रॉन बंब पर परीक्षण किए जा रहे हैं।

विज्ञान का एक पक्ष तो अत्यंत उज्ज्वल है और दूसरा अत्यंत कलुषित और भयंकर दिखाई पड़ता है। फिर विज्ञान का वास्तविक स्वरूप क्या है ? सच बात तो यह है कि विज्ञान से जितना विनाश हुआ है उतना दोष विज्ञान के सिर पर नहीं मढ़ा जा सकता, क्योंकि वह तो निर्जीव है। उसका सदुपयोग या दुरुपयोग मनुष्य पर निर्भर है।

यह तो निश्चित है कि विज्ञान का उपयोग मनुष्य को करना है। विज्ञान वरदान सिद्ध होगा या अभिशाप, यह पूर्ण रूप से मानव समाज की मनोवृत्ति पर निर्भर करता है। विज्ञान तो मनुष्य का दास बन गया है। मनुष्य उसका स्वामी है। वह जैसा भी आदेश देगा, विज्ञान उसका पालन करेगा। यदि मानव मानव रहा तो विज्ञान वरदान सिद्ध होगा, यदि मानव दानव बन गया तो विज्ञान भी अभिशाप ही बनकर रहेगा।

(ड.) विद्यालय का वार्षिकोत्सव

हमारे विद्यालय में उत्सव तो बहुत मनाए जाते हैं, परंतु पारितोषिक वितरणोत्सव विशेष महत्त्व रखता है। यह प्राय: हमारे विद्यालय में नवंबर के अंत में मनाया जाता है, किंतु इस वर्ष दिसंबर की 15 तारीख को ही मनाया गया।

विद्यालय के क्रीड़ा-क्षेत्र में उत्सव मनाने का प्रबंध किया गया। प्रात:काल एक बड़ा सुंदर शामियाना लगाया गया। उसके इर्द-गिर्द भीड़ को नियंत्रित रखने के लिए रस्सी से सीमाएँ बांध दी गई थीं। पूर्व-पश्चिम दोनों ओर आमने-सामने दो स्टेज बनाए गए। एक पर प्रधान महोदय और विद्यालय के अधिकारी बैठे थे। दूसरे पर छात्रों के कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्र तथा अध्यापक विराजमान थे। दाईं ओर प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बैठने के लिए कुर्सियाँ रखी हुई थीं और बाईं ओर साधारण जनता के लिए बैंच रखे हुए थे। एक ओर स्त्रियों के बैठने के लिए प्रबंध किया गया था—दोनों मंडप चित्रों और झंडियों से सजाए गए थे। प्रधान महोदय की कुर्सी के आगे सुंदर मेज़ पर फूलदान रखे हुए थे। इस प्रकार सारा स्थान शोभायमान हो रहा था।

यह उत्सव ठीक प्रात: 10 बजे आरंभ होना था। छात्र बहुत पहले ही नियत स्थानों पर बैठ चुके थे। बालचर चारों ओर तैनात थे। वे सब असुविधाओं को दूर कर रहे थे। दर्शकों की असुविधाओं को दूर करने के लिए हर संभव प्रयत्न किया गया था। ठीक 10 बजे कार्यवाही आरंभ हो गई। प्रधान महोदय ने अपने इस उत्सव की अध्यक्षता प्रदेश के शिक्षामंत्री महोदय से करवायी। उनके पदार्पण करते ही विद्यालय के बैंड ने उनके स्वागत में सुरीली धुन बजाई। फिर विद्यालय के बालचरों ने उनको सलामी दी। तत्पश्चात् सब उपस्थित महानुभावों ने उनका स्वागत किया। उनकी कुर्सी के दाईं और प्रधानाध्यापक तथा बाईं ओर मैनेजर महोदय बैठे थे। इसके एक ओर मेज़ पर छात्रों में बाँटे जाने वाले पारितोषिक रखे हुए थे।

सर्वप्रथम प्रार्थना की गई। इसके पश्चात् विद्यार्थियों ने अपने शारीरिक प्रदर्शन दिखाए। फिर 'अछूतोद्धार' नामक नाटक का अभिनय किया गया। इसमें पुजारी का काम प्रशंसनीय रहा। फिर दो गीत गाए गए, तदनंतर 'सेठ-सेठानी' का खेल खेला गया। फिर कुछ हास्यप्रद कव्वालियाँ प्रस्तुत की गईं। बाद में पहाड़ी नृत्य और गीत गाए गये। तदनंतर मुख्याध्यापक महोदय ने विवरण पत्रिका पढ़कर सुनाई। फिर प्रधान महोदय ने अपने कर कमलों से छात्रों में पारितोषिक बाँटे।

अध्यक्ष महोदय ने छोटा-सा भाषण दिया कि आप सब छात्र देश की संपत्ति हैं। अत: सदा अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए देश के सच्चे नागरिक बनो तभी हमारे देश का उद्धार होगा। तब प्रधानाध्यापक महोदय ने प्रधान जी तथा उपस्थित जनता को धन्यवाद दिया। जिन छात्रों को पारितोषिक मिले थे, वे फूले नहीं समा रहे थे।

4. सेवा में

प्रधानाचार्य,

_____ विद्यालय,

मान्यवर महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरे पिता जी का स्थानांतरण शिमला हो गया है। वे कल यहाँ से जा रहे हैं और साथ में परिवार भी जा रहा है। इस अवस्था में मेरा यहाँ अकेला रहना कठिन है। कृपा करके मुझे स्कूल छोड़ने का प्रमाण-पत्र दीजिए ताकि मैं वहाँ जाकर स्कूल में प्रविष्ट हो सकूं।

कृपा के लिए धन्यवाद।

आपका विनीत शिष्य,

_____

दसवीं 'बी'

दिनांक :

अथवा

विद्यालय,

आदरणीय बंधुवर,

सादर नमस्कार।

मैं यहाँ सकुशल हूँ और मेरा अध्ययन विधिपूर्वक चल रहा है। आप जानते हैं कि परीक्षा निकट आ रही है और मैंने परीक्षा में अच्छा स्थान प्राप्त करने के लिए आपको वचन दे रखा है। आप यह भी जानते हैं कि मेरे पास घड़ी का अभाव है। समय देखने के लिए मुझे दिन में कई बार छात्रावास के मुख्य भवन में लगी घड़ी देखने के लिए जाना पड़ता है। आपसे निवेदन है कि कृपया एक हज़ार रुपए शीघ्र भेजें जिससे मैं अपने लिए एक अच्छी घड़ी खरीद सकूं। घड़ी होने पर मैं समय का सदुपयोग कर सकूंगा और निश्चित की गई समय-सारणी के अनुसार अध्ययन कर सकूंगा।

आशा है कि आप निराश नहीं होंगे। भाभी जी को सादर प्रणाम। सुरुचि को स्नेह।

आपका प्रिय अनुज,

अ ब स।

खण्ड–ग

5. **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त किया के भेद लिखिए:**

(क)

उत्तरः– अकर्मक क्रिया

(ख)

उत्तरः– प्रेरणार्थक क्रिया

(ग)

उत्तरः– सकर्मक क्रिया

6. **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त अव्यय छाँटकर लिखिए:**

(क)

उत्तरः– धीरे–धीरे–

(ख)

उत्तरः– समीप

(ग)

उत्तरः– कल

7. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए–**

(क)

उत्तरः– विधेय , उद्‌देश

(ख)

उत्तरः– निषेधवाचक वाक्य

(ग)

उत्तरः– मिश्र वाक्य

8. **निम्नलिखित का निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन करें:**

(क)

उत्तरः– कौए द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।

(ख)

उत्तरः– मज़दूरों द्वारा वृक्ष काटे जाएंगे।

(ग)

उत्तरः– अनुष्का भोजन नहीं बनाती।

9. **निम्नलिखित पदों का विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए:**

(क)

उत्तरः– आठ अध्यायों का समूह – द्‌विगु समास , राजा का महल – तत्पुरूष समास

(ख)

उत्तरः– आम का फल , सर्वसाधारण , मामूली ,। चक्र – अस्त्र विशेष , व्यूह , घेरा , पहिया।

10.

उत्तर—(क) देव कवि ने पद में श्री कृष्ण के बाल रूप की सुंदरता को प्रस्तुत किया है। साँवले रंग के श्री कृष्ण पीले रंग के वस्त्रों में सजे हुए अति सुंदर लगते हैं। उनके गले में माला है; पाँव में पाजेब है और कमर में करधनी शोभा दे रही है। उनके माथे पर मुकुट है और चेहरे पर मुस्कान चांदनी के समान फैली हुई है।

(ख) श्री कृष्ण की आँखें बड़ी-बड़ी हैं। वे चंचलता से भरी हुई हैं।

(ग) कवि को श्री कृष्ण के चेहरे पर फैली मुस्कान चाँदनी के समान प्रतीत हो रही है।

अथवा

उत्तर—(क) मुख्य गायक गाता है और अपनी कला का प्रदर्शन करता है पर संगतकार उसकी आवाज़ में केवल अपनी आवाज़ ही नहीं मिलाता बल्कि वह उसके स्वर और दिशा को संभालता भी है। उसे स्वरों से दूर भटकने से रोकता भी है।

(ख) मुख्य गायक के साथ संगतकार स्वर साधता है।

(ग) 'पैदल चल कर' संगतकार की निर्धनता और साधनहीनता की ओर संकेत करता है।

11.

(क)

उत्तर—गोपियों के हृदय में श्रीकृष्ण के प्रति अगाध प्रेम था। उन्हें तो सिवाय श्रीकृष्ण के और कुछ सूझता ही नहीं था। वे तो उनकी रूप माधुरी में इस प्रकार उलझी हुई थीं जिस प्रकार चींटी गुड़ पर आसक्त होती है। जब एक बार चींटी गुड़ से चिपट जाती है तो फिर वहाँ से कभी भी छूट नहीं पाती। वे उसके लगाव में अपना जीवन वहीं त्याग देती है। गोपियों को तो ऐसा प्रतीत होता था कि उनका मन श्रीकृष्ण के साथ ही मथुरा चला गया था। वे तो हारिल पक्षी के तिनके के समान मन वचन और कर्म से उनसे जुड़ी हुई थीं। उनकी प्रेम की अनन्यता ऐसी थी कि रात-दिन, सोते-जागते वे उन्हें ही याद करती रहती थीं।

(ख)

उत्तर—सीता-स्वयंवर के अवसर पर श्री राम ने शिव जी के धनुष को तोड़ दिया था जिस कारण परशुराम अत्यंत क्रोधित हो गए थे। तब लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के कारण बताते हुए कहा था कि वह धनुष नहीं था बल्कि धनुही थी। वह बहुत पुराना था और राम के द्वारा छूते ही वह टूट गया था। इसमें राम का कोई दोष नहीं था।

(ग)

उत्तर—बच्चे की उम्र लगभग आठ-नौ महीने से एक वर्ष के बीच होनी चाहिए। उसके मुँह में छोटे-छोटे दाँत हैं जो सामान्य रूप में इसी आयु में निकलते हैं। वह कवि को पहचानता नहीं पर उसके हृदय में उत्सुकता का भाव है। वह उसे बुलाना चाहता है पर अनजान होने के कारण बुलाता नहीं बल्कि कनखियों से उसकी ओर देखता रहता है। ऐसी क्रियाएं प्राय: इस उम्र के बच्चे ही करते हैं।

(घ)

उत्तर– कवि ने इन पंक्तियों में समाज में विवाहिता स्त्री की बहू के रूप में स्थिति की ओर संकेत किया है। वर्तमान में हमारे भारतीय समाज में दहेज प्रथा और अनैतिक संबंधों की आग बहुओं को बहुत तेज़ी से जला रही है। लोग दहेज के नाम पर पुत्रवधू के पिता के घर को खाली करके भी चैन नहीं पाते। वे खुले मुँह से धन माँगते हैं और धन न मिलने पर बहू से बुरा व्यवहार करते हैं, उसे मारते-पीटते हैं और अनेक बार लोभ के दैत्य की चंगुल में आ कर उसे आग में धकेल देते हैं। कवियों ने समाज में नारी की इसी स्थिति की ओर संकेत किया है जो निश्चित रूप से अति दु:खदायी है और शोचनीय है। कितना बड़ा आश्चर्य है कि वह आग कभी उस दहेज लोभियों के घर में उनकी बेटियों को नहीं जलाती। वह सदा बहुओं को ही क्यों जलाती है?

12.

(क)

उत्तर—कवि को ऐसा लगता है कि अभी उसके जीवन में कोई बड़ी-बड़ी उपलब्धियाँ नहीं हैं जिन्हें दूसरों के सामने प्रकट किया जा सके। वह अपने अभावग्रस्त जीवन के कष्टों को अपने हृदय में छिपाकर रखना चाहता है। इसीलिए वह कहता है—'अभी समय भी नहीं।'

(ख)

उत्तर—कवि के अनुसार फसल मनुष्य के परिश्रम, लग्न और शारीरिक परिश्रम के साथ प्रकृति के जादुई सहयोग का परिणाम है। जब मनुष्य और प्रकृति मिल कर कार्य करते हैं तभी फसल की प्राप्ति होती है।

13. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर—(*i*) पाठ—मानवीय करुणा की दिव्य चमक, लेखक—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

(*ii*) लेखक ने फ़ादर बुल्के के स्वभाव में सबके प्रति ममता, स्नेह, दया, करुणा आदि गुणों को देखकर यह कहा है कि वे तो एक ऐसे विशाल वृक्ष के समान थे जो सबको अपनी छाया, फल-फूल और सुगंध प्रदान करता रहता है परंतु स्वयं कुछ नहीं लेता है। फ़ादर भी सबको अपना स्नेह बाँटते रहे।

(*iii*) लेखक के लिए फ़ादर कामिल बुल्के मानवीय करुणा की दिव्य चमक के समान थे। वे लेखक के लिए बड़े भाई के समान मार्गदर्शक, आशीर्वाददाता तथा शुभचिंतक थे। लेखक को उन जैसा हिंदी प्रेमी, संन्यासी होते हुए भी संबंधों को गरिमा प्रदान करने वाला, सबके सुख-दु:ख का साथी अन्य कोई नहीं दिखाई देता था।

अथवा

उत्तर—(*i*) पाठ—बालगोबिन भगत, लेखक—रामवृक्ष बेनीपुरी।

(*ii*) बालगोबिन के बेटे की बीमारी से मृत्यु हो गई थी। उन्होंने मृत बेटे को घर के आँगन में एक चटाई पर लिटा दिया था और उसे एक सफ़ेद कपड़े से ढक दिया था उन्होंने उस पर कुछ फूल और तुलसीदल बिखेर दिए थे और उसके सिरहाने दीपक जला दिया था।

(*iii*) वे अपनी पतोहू को रोने से मना करते हैं और उसे कहते हैं कि आज रोने का नहीं बल्कि उत्सव मनाने का दिन है क्योंकि उसके पति की आत्मा अब परमात्मा से मिल गई है।

14.

(क)

उत्तर—लेखक ने 'संस्कृत व्यक्ति' उस व्यक्ति को बताया है जिसकी योग्यता, बुद्धि, विवेक, प्रेरणा अथवा प्रवृत्ति उसे किसी नए तथ्य का दर्शन कराती है और वह जनकल्याण के लिए निःस्वार्थ भाव से कार्य करता है। संस्कृत व्यक्ति सदा अच्छे कार्य करता है। वह प्राणीमात्र के कल्याण की चिंता करता है। अपने कार्यों से वह किसी का अहित नहीं करता है। स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों को सुख देता है।

(ख)

उत्तर—काशी के पक्का महल क्षेत्र से मलाई बरफ़ बेचने वालों का चले जाना बिस्मिल्ला खाँ को बहुत खलता था। उन्हें यह भी अच्छा नहीं लगता था कि अब काशी में पहले जैसी देशी घी की जलेबियां और कचौड़ियां भी नहीं बनती हैं। वे गायकों के मन में अपने संगतियों के प्रति अनादर के भाव से भी व्यस्थित रहते थे। गायकों द्वारा रियाज़ न करना भी उन्हें अच्छा नहीं लगता। काशी में संगीत, साहित्य और अदब के क्षेत्र में निरंतर हो रही गिरावट ने बिस्मिल्ला खाँ को बहुत व्यथित कर दिया था।

(ग)

उत्तर—चश्मे वाला कोई सेनानी नहीं था और न ही वे देश की फ़ौज में था। फिर भी लोग उसे कैप्टन कहकर बुलाते थे। इसका कारण यह रहा होगा कि चश्मे वाले में देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। वह अपनी शक्ति के अनुसार देश के निर्माण में अपना पूरा योगदान देता था। कैप्टन के कस्बे में चौराहे पर नेता जी सुभाष चंद्र बोस की मूर्ति लगी हुई थी। मूर्तिकार उस मूर्ति का चश्मा बनाना भूल गया। कैप्टन ने जब यह देखा तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसके मन में देश के नेताओं के प्रति सम्मान और आदर था। इसीलिए वह जब तक जीवित रहा उसने नेता जी की मूर्ति पर चश्मा लगाकर रखा था। उसकी इसी भावना के कारण लोग उसे कैप्टन कहकर बुलाते थे।

(घ)

उत्तर—नवाब साहब ने साधारण से खीरों को इस तरह से संवारा कि वे खास हो गए थे। खीरों की सजावट ने लेखक के मुँह में पानी ला दिया था। परंतु वे पहले ही खीरा खाने से इन्कार कर चुके। अब उन्हें अपना भी आत्म-सम्मान बचाना था। इसीलिए नवाब साहब के दुबारा पूछने पर उन्होंने मेदा (अमाशय) कमज़ोर होने का बहाना बनाया।

15.

(क)

उत्तर—लेखक ने फ़ादर बुल्के को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बताया है। फ़ादर बुल्के बेल्जियम के रेम्स चैपल के रहने वाले थे। उन्होंने संन्यासी बन कर भारत में आने का फैसला किया। भारत में उन्होंने भारतीय संस्कृति को जाना और समझा। मसीही धर्म से संबंध रखते हुए भी उन्होंने हिंदी में शोध किया। शोध का विषय था—रामकथा : उत्पत्ति और विकास। इससे उनके भारतीय संस्कृति के प्रति लगाव का पता चलता है। जब तक रामकथा है, उस समय तक इस विदेशी भारतीय साधु को रामकथा के लिए याद किया जाएगा। इस आधार पर कह सकते हैं कि फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं।

(ख)

उत्तर—लेखिका की माँ एक अनपढ़ घरेलू महिला थी। उनमें धैर्य और सहनशक्ति अधिक थी। उनके सभी काम पति और बच्चों के इर्द-गिर्द घूमते थे। वे हर समय सबकी सेवा में तत्पर रहती थी जैसे उन सबका काम करते रहना ही उनका फर्ज़ है। इस तरह उनका कार्यक्षेत्र घर और रसोईघर तक सीमित था। उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी किसी से अपने लिए कुछ नहीं माँगा था। सदैव उन्होंने दूसरों को अपने पास से दिया ही था। माँ का त्याग और सहनशीलता लेखिका का आदर्श कभी नहीं बन पाया था।

(ग)

उत्तर—पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना उनके अनपढ़ होने का सबूत नहीं है। उस समय आम बोलचाल और पढ़ने-लिखने की भाषा प्राकृत थी। जिस प्रकार आज हम हिंदी, बांग्ला, मराठी आदि भाषाओं का प्रयोग बोलने, पढ़ने-लिखने आदि के लिए करके हम स्वयं को पढ़ा-लिखा, सुसभ्य और सुसंस्कृत बताते हैं। उसी प्रकार प्राचीन समय में प्राकृत भाषा का विशेष महत्त्व है। हम लोगों का प्राचीन साहित्य स्पष्ट प्राकृत भाषा में है और उसी साहित्य से हमें तत्कालीन समाज का वर्णन मिलता है। इसलिए हम प्राकृत भाषा में बोलने वाली स्त्रियों को अनपढ़ नहीं कह सकते हैं।

16. निम्नलिखित प्रश्नों मे से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क)

उत्तर—प्रकृति का जलसंचय करने का अपना ही ढंग है। सर्दियों में वह बर्फ के रूप में जल इकट्ठा करती है। गर्मियों में जब लोग पानी के लिए तरसते हैं तो ये बर्फ शिलाएँ पिघलकर जलधारा बन जाती हैं जिससे हम लोग जल प्राप्त कर अपनी प्यास और दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

(ख)

उत्तर—टुन्नू जब दुलारी को होली के अवसर पर खादी की धोती देकर चला जाता है तो दुलारी उसकी भेंट को लेकर उसी के विचारों में खोई रहती है। इन विचारों से मुक्ति पाने के लिए वह रसोई की व्यवस्था में जुटना ही चाहती है कि फेंकू सरदार उसके लिए मैंचेस्टर और लंकाशायर की मिलों में बनी बारीक सूत की मखमली किनारेवाली धोतियों का बंडल लेकर आता है। तभी उधर से जलाने के लिए विदेशी वस्त्रों का संग्रह करता हुआ देशभक्तों का दल 'भारत जननी तेरी जय' गीत गाते हुए निकलता है। लोग अपने पुराने विदेशी वस्त्र उन्हें दे रहे थे। दुलारी अपनी खिड़की खोल कर फेंकू द्वारा लाया गया धोतियों का बंडल नीचे फैली चादर पर फेंक देती है। इससे उसकी फेंकू के प्रति नफ़रत, टुन्नू के प्रति करुणा तथा देश के प्रति प्रेम की भावना व्यक्त होती है।

(ग)

उत्तर—अख़बारों ने ज़िंदा नाक लगने की ख़बर को केवल इतना ही प्रस्तुत किया कि नाक का मसला हल हो गया है और राजपथ पर इंडिया गेट के पास वाली जॉर्ज पंचम की लाट के नाक लग रही है।

(घ)

उत्तर—बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को क्रीड़ाओं तथा लीलाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। वे अपने मन की भावनाओं को अपनी क्रीड़ा के माध्यम से प्रकट करते हैं। उनकी भावनाएँ ही उनके प्रेम का प्रतीक होती हैं। वे कभी नाराज़ तो कभी प्रसन्न होकर अपना प्रेम प्रदर्शित करते हैं।

17.

उत्तर—लेखक ने एक दिन जापान में घूमते हुए एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया देखी। यह छाया विस्फोट के समय वहाँ खड़े किसी व्यक्ति की थी जो विस्फोटक पदार्थ के कारण भाप बन गया होगा। वह विस्फोट इतना भयंकर था कि पत्थर भी उससे झुलस गया था। लेखक ने जब उस पत्थर को देखा तो वह हैरान हो गया। उसके मन-मस्तिष्क में अणु-विस्फोट के समय हुई सारी घटना कल्पना के माध्यम से घूम गई। उसने मन ही मन उस सारी घटना को महसूस कर लिया। उसे ऐसा लगा जैसे वह उस अणु-विस्फोट के समय वहाँ मौजूद हो और वह विस्फोट उसके सामने हुआ हो। इस प्रकार लेखक अपनी अनुभूति से हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया।

अथवा

उत्तर—प्रकृति के अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को लग रहा था कि वह आदिमयुग की कोई अभिशप्त राजकुमारी है, बहती जलधारा में पैर डुबोने से उसकी आत्मा अंदर तक भीगकर उसे सत्य और सौंदर्य का अनुभव होने लगा था। हिमालय से बहता झरना उसे जीवन की शक्ति का अहसास करा रहा था। उसे लग रहा था कि उसकी सारी बुरी बातें और तासिकताएं निर्मल जलधारा के साथ बह गई थीं। वह भी जलधारा में मिलकर बहने लगी थी। अर्थात् वह एक ऐसे शून्य में पहुँच गई थी जहाँ अपना कुछ नहीं रहता। सारी इंद्रियाँ आत्मा के वश में हो जाती हैं। लेखिका उस झरने की निर्मल धारा के साथ बहते रहना चाहती थी। वहाँ उसे सुखद अनुभूति का अनुभव हो रहा था।